डॉ० अम्बेडकर और बौद्ध धर्म

डॉ० राघवेन्द्र कुमार

डॉ० अम्बेडकर भी इसी भावना से अभिभूत होकर बुद्ध की शरण में गये। उन्होंने पाया कि बुद्धिज्म मानव को शील सम्पनन, प्रज्ञावन, सुसमाहित तथा मेघावी बनाता है जो जीवन की दुस्तर बाढ़ को पार कर सकने में सक्षम होता है। बौद्ध धर्म और दर्शन में यह देखना है कि आदमी को शील व सदाचरण की रक्षा करनी चाहिए ताकि समाज में सम्यक सम्बन्धों की स्थापना और न्यायोचित व्यवस्था हो सके। बौद्ध धम्म–दर्शन प्रज्ञा पर आधारित है अर्थात् जगत् की सही समझ जो मानव के हितार्थ उपयोगी हों। साथ ही बौद्ध धम्म दर्शन शील प्राण है। इन दो चीजों–प्रज्ञा तथा शील का अनुपम मिश्रण ही बाबा साहेब अम्बेडकर को बुद्ध की ओर ले गये। प्रज्ञा मार्ग–दर्शक होती है और शील ही लोक में कल्याणकारी है। इन दोनों के बिना मानव समाज का कल्याण सम्भव नहीं है। डॉ० अम्बेडकर ने अपने महान ग्रन्थ 'भगवान् बुद्ध और उनका धम्म' में यह लिखा कि प्रज्ञा वह निर्मल बुद्धि है जो 'मिथ्या–विश्वासों'–ईश्वर में आस्था, अमर आत्मा, आवागमन, अदृष्ट, नरक–स्वर्ग से आदमी को मुक्त करती है ओर उसे उचित–अनुचित, शुभ–अशुभ, कुशल–अकुशल का बोध कराती है। प्रज्ञा का सही उपयोग के साथ व्यवहार में निहित है। शील वह सदाचरा है जो पंच–शील, अष्ट–शील, दस–शील आदि के मार्ग पर ले जाता है।